डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक : 07.04.2021

पत्र : चतुर्थ / छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

कलगी बाजरे की काव्य की व्याख्या (शेष...)

वे फिर कहते हैं —

"मगर क्या तुम
नहीं पहचान पाओगी :
तुम्हारे रूप के —
तुम हो, निकट हो, इसी जादू के —
निजी किस सहज, गहरे बोध से,
किस प्यार से मैं कह रहा हूँ —
अगर मैं यह कहूँ, —
बिछली घास हो तुम
लहलहाती हवा में कलगी छरहरी बाजरे की"

अर्थात्, तुम्हारा प्यार, तुम्हारे रूप के प्रति प्रशंसा का भाव मेरे मन में तनिक भी नहीं घटा है वह उतना ही गहरा है। मगर मैं तुम्हें नये उपमानों के द्वारा प्रशंसा करना चाहता हूँ। मगर मेरे इस नवीन अनुभूति को क्या तुम नहीं पहचान पाओगी, जो तुम्हारी सुंदरता के लिए है। वास्तव में तुम इसी के अनुरूप के, सुंदरता के आसपास हो। पता नहीं मैं किस प्रकार से तुम्हें यह कह रहा हूँ। मैं तो तुम्हें अगर मेरे नेत्रों को सुख देने वाली हरी बिछली घास जैसी हो तुम या फिर, लहलहाती छरहरी (लम्बी-सी पतली) बाजरे की कलगी हो।

फिर वे कहते हैं —

"आज हम शहरातियों को
पालतू मालंच पर सँवरी जुही के फूल से
सृष्टि के विस्तार का - ऐश्वर्य का
औदार्य का —
कहीं सच्चा, कहीं प्यारा
एक प्रतीका
बिछली घास है,
यह शरद की साँझ के सूने गगन की पीठिका पर
दोलती कलगी अकेली
बाजरे की।"

कवि खुद के बारे में कहते हैं कि आज हम जैसे

शहरी रचनाकारों को किसी रूपसी नारी को जूही की फूल कहने की अपेक्षा बिछली घास कहना ज्यादा सच्चा, ज्यादा प्यारा और संतोषजनक लगता है। वह एक बिछली घास ही सच्चा हमारे प्रेम का प्रतीक लगता है। या फिर शरद ऋतु के शाम में सूने आकाश की पृष्ठभूमि में डोलरी बाजरे की अकेली कलगी कहना ज्यादा सच्चा लगता है। फिर वे कहते हैं—

"और सचमुच, इन्हें जब-जब देखता हूँ
यह खुला वीरान संसृति का घना हो सिमट आता है—
और मैं एकान्त होता हूँ
समर्पित
सब जादू हैं—
मगर क्या यह समर्पण कुछ नहीं है?"

फिर वे अपनी सफाई में यह भी कहता है कि जब मैं तुम्हें इन उपमानों से उपमित करता हूँ तो एकान्त क्षणों में तुम्हारे प्रति ज्यादा सघन भाव से समर्पित अनुभव करता हूँ। मगर फिर कवि को लगता है कि क्या यह समर्पण कुछ नहीं है। इस प्रश्नात्मक सोच के साथ कवि अपने मन के भावों को विराम देते हैं। अभिप्राय यह है कि कवि को इस पूरी कविता में अपनी प्रेयसी को हरी बिछली घास और बाजरे की लम्बी-सी पतली कलगी कहना ज्यादा ताजगी और प्यार भरा अनुभव होता है। कवि के पुराने उपमानों और प्रतीकों के जगह इन नवीन उपमानों और प्रतीकों से अपनी प्रेयसी को सम्बोधन या प्रशंसा करने में ज्यादा आत्मसंतुष्टि प्राप्त होती है।

शब्दार्थ :- बिछली = बिछा हुआ।,
छरहरी = दुबली-सी पतली।
पीठिका = पीठी, पृष्ठभूमि। तारिका = तारा।
संसृति = संसार। नीहार = ओस, कुहासा, पाला।
ऐश्वर्य = धन, संपत्ति। उपमान = जिससे किसी वस्तु की उपमा दी जाती है।, सादृश्य।
प्रतीक = प्रतिरूप, आकृति
मुलम्मा = बरतन के उपर के चमकदार परत
बोध = ज्ञान, भ्रम का न होना, धीरज, धैर्य।
शहरातियों = शहरी
मालंच = एक प्रकार का घास जो पानी में होता है
औदार्य = उदारता।